International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(1): 78-81
Received: 09-11-2021
Accepted: 12-12-2021

डॉ० रेनू जलाल
सहायक प्राध्यापिका, मनोविज्ञान विभाग, एम0 बी0 पी0 जी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी, कुमाऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

मोहन चन्द्र
शोधार्थी–मनोविज्ञान विभाग, एम0 बी0 पी0 जी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी, कुमाऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ० रेनू जलाल
सहायक प्राध्यापिका, मनोविज्ञान विभाग, एम0 बी0 पी0 जी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी, कुमाऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पति और पत्नियों के मानसिक स्वास्थ पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ० रेनू जलाल एवं मोहन चन्द्र

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पति और पत्नियों के मानसिक स्वास्थ पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। जिसका मुख्य उद्देश्य दोनों वर्गों के मानसिक मनोस्थिति उजागर करने का प्रयास है। शोध कार्य में 20 मद्यव्यसनी पति व 20 मद्यव्यसनी पति की पत्नियों तथा 20 गैर–मद्यव्यसनी पति एवं 20 गैर–मद्यव्यसनी पति की पत्नियों प्रयोज्यों का चयन असमभाव्य प्रतिचयन के अन्तर्गत स्वेच्छा अनुसार प्रतिदर्श से किया गया है। अध्ययन में यह पाया गया है कि मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पति एवं उनकी पत्नियों के मानसिक स्वास्थ पर सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।

कुटशब्दः मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी, पत्नियों के मानसिक स्वास्थ

प्रस्तावना
मद्यव्यसन की समस्या विगत पूर्व एक नैतिक समस्या एवं सामाजिक अनुत्तरदायित्व लक्षणों के रूप में समझा जाता था । वर्ष 1960 एवं 1977 में कुछ राज्यों में मद्य –निषेध की नीति लागू होने के बाद मद्यव्यसन को एक अभिशाप के रूप में देखा जाने लगा। मद्यव्यसन एक ऐसी मानसिक विकृति है जो सिर्फ मद्यव्यसनी या उसके परिवार को ही प्रभावित नही करता है बल्कि समाज में हत्या, बलात्कार, रोड दुर्घटना के कारणों को भी जन्म देता है। सारासन के अनुसार मद्यपानता एक ऐसी चिरकालिक अवस्था है जिसमें व्यक्ति शारीरिक और दैहिक कारणों से अपने आप को इतनी अधिक मात्रा में अल्कोहल पीने रोक नही पाता है कि उसमें उन्माद उत्पन्न न हो जाए और अन्ततः उनका स्वास्थ खराब न हो जाए एवं सामाजिक और व्यवसायिक क्षति न हो जाए। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान (2011) की एक रिर्पोट के अनुसार लगभग 30–35 प्रतिशत वयस्क पुरूष तथा लगभग 5 प्रतिशत वयस्क महिलाएं मदिरा का सेवन करती है।
मद्यव्यसन के संबंध में जापान की एक मशहूर लोकोक्ति है कि पहले व्यक्ति मदिरा का सेवन करता है , उसके बाद मदिरा ही मदिरा का सेवन करती है और अन्त में मदिरा व्यक्ति का ही सेवन करती है। प्रायः मदिरापान एवं मद्यव्यसन को एक ही श्रेणी में रखना अनुचित है। ।
यदि मदिरापान एक सीमा के अन्दर किया जाय जो उसे हम व्यसन की श्रेणी में नही रख सकते है क्योंकि वह भोजन या पेय का एक भाग है जबकि अधिक रूप या सीमा से अधिक मद्यपान निःसदेह व्यसन को जन्म देता जिसे आम बोलचाल की भाषा में व्यसनी कह सकते है।
मद्यव्यसनी के अनेक कारण हो सकते है परन्तु मुख्य रूप से तीन कारण किसी भी व्यक्ति को मद्यपान का व्यसनी बनाता है।
जैविक कारण – मद्यव्यसन की प्रवृत्ति आनुवंशिक कारको पर भी निर्भर करती है। इसकी पुष्टि कई शोधों में हो चुकी है। विगत अध्ययनो के अनुसार 40 प्रतिशत मद्यव्यसनीयों के माता–पिता में से पहले से ही मद्यव्यसन का आदि था।
मनोवैज्ञानिक कारण – मद्यव्यसनी व्यक्ति न केवल शारीरिक रूप से मदिरा का सेवन करता है बल्कि अत्यंत प्रबल मनोवैज्ञानिक निर्भरता को भी विकसित कर लेता है। अत्यधिक मदिरा पान के सेवन से व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का कुसमायोजित हो जाता है।
सामाजिक–सांस्कृतिक कारण – मद्यव्यसनी व्यक्तियों तथा सामान्य व्यक्तियों की सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में कई अन्तर पाये जाते है।
स्वास्थ – किसी व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होने की स्थिति को स्वास्थ कहते है।
विश्व स्वास्थ संगठन के अनुसार – स्वास्थ केवल रोग या दुर्बलता की अनुपस्थिति ही नही बल्कि एक संपूर्ण शारीरिक,मानसिक एवं सामाजिक खुशहाली की स्थिति है। स्वस्थ व्यक्ति दैनिक जीवन की गतिविधियों से निपटने के लिए और किसी भी परिवेश अनुसार अपने आप को समायोजित करने में सक्षम रहते है। वेबस्टर का मानना है कि स्वास्थ शरीर मस्तिष्क अथवा आत्मा से दृढ़ता की अवस्था है, विशेषतयाः शारीरिक रोगों या पीड़ा से मुक्त होना।

वेबस्टर इंगलिश शब्दकोश के अनुसार – स्वास्थ शारीरिक एवं दृढ़ता की अवस्था के कार्य समय पर प्रभावी रूप से निष्पादित किये जाते है। शारीरिक स्वास्थ – शारीरिक स्वास्थ शरीर की उस स्थिति को प्रर्दशित करता है जिसमें इसकी संरचना, विकास, कार्यप्रणाली एवं रखरखाव सम्मिलित होता है।

मानसिक स्वास्थ का अर्थ व्यक्ति के भावनात्मक और आध्यामिक लचीलेपन से है जो व्यक्ति को अपने जीवन में दर्द, निराशा और उदासी की स्थितियों में जीवित रहने के लिए सक्षम बनाती है। कार्ल मेनिंगर (1945) के अनुसार – मानसिक स्वास्थ अधिकतम खुशी तथा प्रभावशीलता के साथ वातावरण एवं उसके प्रत्येक दूसरे व्यक्ति के साथ मानव समायोजन है। वह एक संतुलित मनोदशा, सतर्क बुद्वि, सामाजिक रूप से मान्य व्यवहार तथा एक खुशमिजाज बनाए रखने की क्षमता है।

मानसिक विकार व्यक्ति के स्वास्थ–संबंधी व्यवहार फैसले, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नीद एवं यौन व्यवहार आदि को प्रभावित कर शारीरिक रोगों के दुषभ्रवाव में भी वृद्वि करता है मानसिक अस्वस्थता बेरोजगार पारिवारिक विघटन नशीले पदार्थो का सेवन एवं संबंधित अपराध का सहभागी भी है। यदि किसी व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ सही रहेगा तो जीवन भी सही रहेगा।

स्ट्रेन्ज (1965) के अनुसार – मानसिक स्वास्थ से तात्पर्य वैसे सीखे गए व्यवहार से होता है जो सामाजिक रूप से अनुकूली होते है और जो व्यक्ति को निजी जीवन के साथ पर्याप्त रूप से मुकाबला करने की अनुमति देता है।

मानसिक स्वास्थ के तत्व – कार्ल रोजर्स मैसले तथा मिटिलमैन द्वारा मानसिक स्वास्थ के क्षेत्र में अध्ययन कर समीक्षा की गयी और उसके आधार पर उन सूचको की सूची तैयारी की जिन्हे धनात्मक स्वास्थ के प्रमुख तत्वों के रूप में समझा गया है जो यथा –

(क) सामान्य वर्धन एवं विकास।
(ख) अपने प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति।
(ग) भविष्य के प्रति उचित सकारात्मक मनोवृत्ति।
(घ) स्वतन्त्रता।
(ड़) अधिकतम स्तर तक अपनी क्षमता का उपयोग करना।
(च) स्वास्थ आत्म–सम्मान पर आधारित ज्ञान।

साहित्यलोकः

मैलिलो एवं हाउडे (2011), हविओ, इनकिनन और पोर्टल (2013) ने अपने अध्ययनों के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि अत्यधिक शराब पर निर्भरता से व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, शराबी कि सीखने में कमी आना, फैसले की समस्या, सोच व कौशल को सुलझाना और अल्पावधि यादास्त का क्षरण अलग–अलग लक्षणों के परिणाम मदिरा पर निर्भर व्यक्तियों में हो सकता है। इन व्यक्तियों में अवसाद, आतंक विकार, व्यामोह, अपराध, आत्मसम्मान की कमी, पारस्परिक कठिनाइयों और अन्य रोग संबंधी परिस्थितियों में शमिल हो सकता है।

ईयर बुक ऑफ ऐल्कोहल ड्रग्स (2011) के आकड़ो के अनुसार ग्राहकों के बीच सबसे सामान्य प्राथमिक निदान शराब से संबंधित बीमारीयां है। फाइनलैंडस मे 65 वर्ष की आयु में एमेस्टिक सिंड्राम, विलक्षणता के साथ वापसी की स्थिति मनोवैज्ञानिक विकार,निर्भरता सिंड्रोम, अल्कोहल के उपयोग के कारण मानसिक और व्यवहारिक तर्कवाद, मनोदशा के आक्रामकता की योग्यता, बिगड़ा हुआ ध्यान फैसले और व्यक्तिगत कार्यकलाप के साथ हस्ताक्षेप, इसके अलावा अस्थिर चाल, खड़े होने में कठिनाई, घबराया हुआ भाषण, निस्टागमस स्तर में कमी, चेतन की चेतना, उत्तेजित चेहरे और संभोग संबंधी संक्रमण शराब में हो सकते है।

शोधपत्र का उद्देश्य

1) मद्यव्यसनी एवं गैर –मद्यव्यसनी पति के मानसिक स्वास्थ का अध्ययन करना।
2) मद्यव्यसनी एवं गैर –मद्यव्यसनी पति की पत्नियों के मानसिक स्वास्थ का अध्ययन करना।

उपकल्पनाः–

1) मद्यव्यसनी एवं गैर –मद्यव्यसनी पति के मानसिक स्वास्थ में सार्थक अन्तर होगा।
2) मद्यव्यसनी एवं गैर –मद्यव्यसनी पति की पत्नियों के मानसिक स्वास्थ में सार्थक अन्तर होगा।

अध्ययन के क्षेत्रः–प्रस्तुत कार्य के अध्ययन हेतु प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए जनपद नैनीताल में स्थित नशामुक्ति केन्द्र (मनन नशा मुक्ति केन्द्र) चयन किया गया है। उत्तराखण्ड अपनी सुन्दरता व पर्यटन के लिए विश्व प्रसिद्व है। इसके उत्तर में अल्मोड़ा व दक्षिण में उधमसिंह नगर जिला स्थित है। जनपद में सबसे अधिक नशा मुक्ति केन्द्र हल्द्वानी शहर में स्थित है जिनमें – निर्वाण नशामुक्ति केन्द्र, मनन नशामुक्ति केन्द्र, मंथन नशामुक्ति केन्द्र, साई नशामुक्ति केन्द्र आदि स्थित है।

संमको का संकलन – प्रस्तुत शोध में प्रस्तावित परिकल्पना की जॉच करने तथा समकों के सग्रहण हतु निरीक्षण विधि, साक्षात्कार विधि, अनुसूची तथा प्रशनावली का उपयोग किया गया है।

प्रतिदर्श – प्रस्तुत शोध में नैनीताल जनपद में स्थित नशा मुक्ति केन्द्र व सामान्य परिवार के व्यक्ति अध्ययन की इकाई है। शोध में 20 मद्यपी पुरूष व 20 गैरमद्यपी पुरूष तथा 20 मद्यपी व 20 गैरमद्यपी पुरूषों की पत्नियों का चयन अस्म्भाव्य प्रतिचयन के अन्तर्गत स्वेच्छा अनुसार प्रतिदर्श के माध्यम से किया गया है।

उपकरण – डॉ0 जगदीश एवं डॉ0 ए0 के0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ सूची।

आँकड़ो का सांख्यिकि विश्लेषण – प्रस्तुत शोध में प्राप्त आँकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण करने हेतु टी–परीक्षण का उपयोग किया गया है।

परिणाम –

मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों एवं उनकी पत्नियों के मानसिक स्वास्थ पर प्रभाव का अध्ययन हेतु टी–परीक्षण विधि का प्रयोग किया है। परिणाम को तालिका 1 व 2 में दर्शाया गया है।

तालिका 1: मद्यव्यसनी एवं गैर मद्यव्यसनी पतियों के मानसिक स्वास्थ पर प्रभाव ।

श्रेणी	आँकडो की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता के अंश पर	टी– अनुपात
मद्यव्यसनी पति	20	149.5	22.58	38	2.059
गैर–मद्यव्यसनी पति	20	185.3	14.277	38	

स्त्रोतः प्राथमिक श्रोतो पर आधारित ।

उपयुक्त तालिका को चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है।

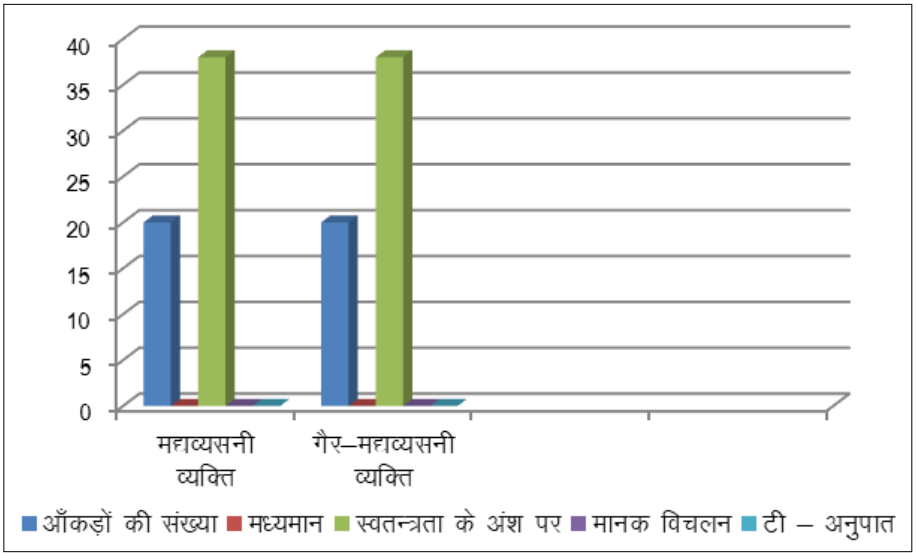

प्रस्तुत अध्ययन में मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों के मानसिक स्वास्थ पर प्रभाव के प्राप्तांक में ही में टी–परीक्षण का मान 2.059प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश पद 0.05 प्रतिशत के विशाल स्तर पर 1.686 मान प्राप्त हुआ तथा 0.01 प्रतिशत के विशाल स्तर पर 2.429 का मान हुआ। जिसमें टी का मान 5 प्रतिशत विश्वास पर सार्थक नही है एवं 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर टी का मान सार्थक है। इस लिये इस शोध में बनायी गयी प्रथम उपकल्पना को 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार शोध पत्र में बनायी गई प्रथम उपकल्पना मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों के मानसिक स्वास्थ में सार्थक अन्तर होगा को अस्वीकृत सिद्व होती है। क्योकि मद्यव्यसनी एवं गैर –मद्यव्यसनी पुरूषों के मानसिक स्वास्थ में सार्थक अन्तर नही देखा गया।

तालिका –2: मद्यव्यसनी एवं गैर –मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के मानसिक स्वास्थ पर प्रभाव।

श्रेणी	आँकडो की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता के अंश पर	टी– अनुपात
मद्यव्यसनी व्यक्ति की पत्नी	20	152.5	21.37	38	1.941
गैर–मद्यव्यसनी व्यक्ति की पत्नी	20	186.7	19.8063	38	

स्त्रोतः प्राथमिक संमको पर आधारित

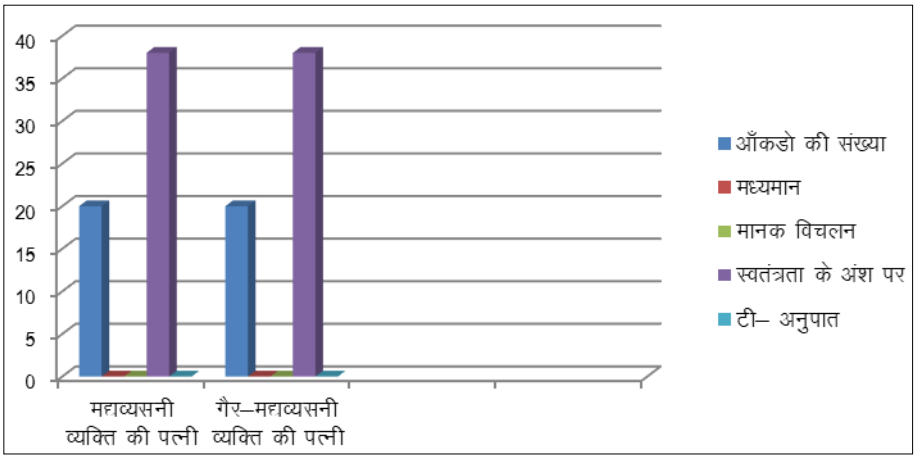

प्रस्तुत अध्ययन में मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के मानसिक स्वास्थ पर प्रभाव के प्राप्तांक में ही में टी–परीक्षण का मान 1.941 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश पद 0.05 प्रतिशत के विशाल स्तर पर 1.686 मान प्राप्त हुआ तथा 0.01 प्रतिशत के विशाल स्तर पर 2.429 का मान हुआ। जिसमें टी का मान 5 प्रतिशत विश्वास पर सार्थक नही है एवं 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर टी का मान सार्थक है। इस लिये इस शोध में बनायी गयी द्वितीय उपकल्पना को 5 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर अस्वीकृत किया जाता है मद्यव्यसनी एवं गैर – मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के मानसिक स्वास्थ में सार्थक अन्तर होगा । इस प्रकार शोध पत्र में बनायी गई प्रथम उपकल्पना मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों के मानसिक स्वास्थ में सार्थक अन्तर होगा को अस्वीकृत सिद्व होती है। क्योकि मद्यव्यसनी एवं गैर – मद्यव्यसनी पुरूषों के मानसिक स्वास्थ में सार्थक अन्तर नही देखा गया।

शोध निष्कर्ष – प्रस्तुत अध्ययन में मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पति एवं उनकी पत्नियों के मानसिक स्वास्थ पर प्रभाव का अध्ययन ज्ञात करना। शोध हेतु प्रथम उपकल्पना थी कि मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरषों के मानसिक स्वास्थ में सार्थक अन्तर होगा। प्राप्त आँकडों के अनुसार मद्यव्यसनी पुरूषों एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरूषों के मानसिक स्वास्थ में किसी भी प्रकार की समानता नही पाई गई। जिस कारण प्रथम परिकल्पान असत्य सिद्व हुई कि मद्यव्यसनी एवं गैर–मद्यव्यसनी पुरषों के

मानसिक स्वास्थ में सार्थक अन्तर होगा। परिकल्पना सिद्व होने के पीछे का कारण मद्यपान हो सकता है क्योंकि गैर–मद्यव्यसनी व्यक्ति किसी भी प्रकार के व्यसन का आदि नही है एवं व्यसन धीरे–धीरे व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ को प्रभावित करने लगता है। व्यसन मुक्त व्यक्ति का जीवन अधिकतर स्वस्थ होता है एवं उसके सोचने–समझने की शक्ति व्यसन करने वाले से अधिक सकारात्मक एवं प्रबल होती है।

अध्याय में दुसरी परिकल्पना थी कि मद्यव्यसनी एवं गैर मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के मानसिक स्वास्थ में सार्थक अन्तर होगा। प्राप्त आँकड़ो के अनुसार मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों एवं गैर मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के मानसिक स्वास्थ में किसी भी प्रकार की समानता नही पाई गई कारण द्वितीय परिकल्पना सार्थक सिद्व नही हो पाई। प्राप्त आँकड़ो के अनुसार मद्यपान करने वाले पुरूषों की पत्नियों का मानसिके स्वास्थ अधिक कुसमायोजित रहता है जिसका प्रभाव उनके वैवाहिक, पारिवारिक व सामाजिक संबंधो पर देखा जा सकता है। ऐसे परिवार जहाँ के पुरूष अधिक व्यसन करते है उस परिवार में अधिकतर तनावपूर्ण वातावरण बना रहता है। इसके विपरित गैर मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के मानसिक स्वास्थ अधिकतर सक्रिय एवं अधिक प्रभावी रहता है। जिसक प्रभाव दोनों के वैवाहिक जीवन, पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक वातावरण पर सकारात्मक पाया जाता है। शोध के आँकड़े सीधे तौर पर मद्यव्यसनी एवं गैर मद्यव्यसनी पुरूषों की पत्नियों के मानसिक स्वास्थ को सीधे प्रभावित करता है।

सन्दर्भ:

1. Ahuja R. *Samajik Samasya.* Jaipur: Rawat Publication, 2016.
2. Melillo H. Geropsychiatric and Mental health nursing Sudbury MA.joness bartlett learning. journal of zerontological nursing, 2011, 51-58.
3. Sharma GP. Menatl Health and Psychiatric Nursing. jaipur: Jain Publication, 2014.
4. Singh AK. Modern Abnormal Psychology (7 ed.). Delhi: Motilal Banarsidas, 2013.